**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 07 July- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

# स्त्री स''ाक्तिकरण में 'बिन्दिया' का योगदान

शोध निर्दे''ाक
डॉ0 वन्दना श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर(हिन्दी विभाग)
जे0एन0पी0जी0 कॉलेज,लखनऊ
लखनऊ वि''वविद्यालय,लखनऊ

शोधार्थी–उर्मिला मौर्या
हिन्दी विभाग
जे0एन0पी0जी0 कॉलेज,लखनऊ
सहायक आचार्य
कमला आर्य कन्या पी0जी0 कॉलेज
मीरजापुर

**भोधसार** –

भोजपुरी के प्रथम उपन्यास के गौरव से विभूषित रामनाथ पाण्डेय जी कृत बिन्दिया सन् 1956 ई0 में प्रकाि''त होकर अत्यन्त प्र''ंसित और चर्चित हुआ। 13 खण्डों में लिखा यह उपन्यास देखने में भले छोटा लगे किन्तु कथानक और कथ्य की दृष्टि से बेजोड़ है। इसमें तत्कालीन समाज का जीवन्त चित्रण है तो इस समय के समाज में फैली स्त्री–विम''ा की चर्चा और बहस की चिंगारी, सामाजिक ताना बाना और वर्ग भेद की दिवाल है जो आज भी अपने समाज में सहज दिखाई देती है।

कथा नायिका बिन्दिया के पिता की गिनती एक समय गाँव के प्रतिष्ठित किसान के रूप में होती थी किन्तु अब वह खाट पर हैं। ऐसी स्थिति में भी कोदई किसान की मातृहीन बेटी बिन्दिया अपने वृद्ध पिता और उनकी खेती को बहुत ही साहस तथा धैर्य से सम्भालती है तथा अपने प्रेमी मंगरा को सामाजिक मान्यता प्रदान कराती है। वह अत्यन्त ही सराहनीय है। गाँव का आवारा, लंफट, मनबढ़ युवक झमना बिन्दिया के रूप लावण्य पर लट्टू है और उसे नैतिक अनैतिक किसी भी तरीके से प्राप्त करना चाहता है।

**बीज भाब्द** – लावण्य, उच्छृंखल, उत्पीड़ित, प्रतिमूर्ति, प्रतिरोध, स''ाक्तिकरण, शा''वत, आत्मवि''वास, मनोवृत्तियों, बिन्दिया।

एक दिन झमना सरसों के खेत में बिन्दिया को अकेला देखकर कहता है–

बिन्दिया हम कवन कसूर कइले बानी। जवना से ते एतना अनराज रहतारिस हम आज सहर जा तानी, कह त तोरा खातिर नीमन बिन्दी ले ले आयेब।[1]

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 07 July- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बिन्दिया प्रेम के इस उच्छृंखल स्वरूप का विरोध करती है। जिस प्रेम में स्वार्थ हो, देह सुख की आसक्ति हो, वह प्रेम केवल बाहरी आडम्बर प्रस्तुत करता है। उससे प्रेम के उदात्त भाव का स्वरूप कलुषित होता है। इसलिए झमना के उच्छृंखल प्रस्ताव को सुनकर बिन्दिया अंगार हो जाती है– हम तोर के हई ? जो ते अपना बहिन महतारी खातिर ले आव।[2]

झमना अपने इस अपमान से आग बबूला होकर बिन्दिया से बदला लेने की सोचता है और साजि''ा के तहत कोदई के दिमाग में बिंदिया और मंगरा के झूठे प्रेम–सम्बन्ध का जहर भरता है– मंगरा जौरे ओकर खराब संगत हो गइल बा। सभे कहता ऊ ओकरा से फंस गइल बिया।[3]

कोदई झमना की बातों में आकर अत्यन्त दुःखी होते हैं राम हो राम! ऊ हरामजादी अइसन हो गइल बिया?[4]

आज जमाना कितना ही हाइटेक हो गया हो, इन्टरनेट की सेवा घर–घर पहुँच गयी हो, लेकिन जब एक लड़की विपरीत लिंग के प्रति आकर्षित होती है या प्रेम करती है तो गाँव, समाज, परिवार का मन माहुर हो ही जाता है। बिन्दिया जैसे 1956 में गाँव, समाज, परिवार के लोग की आँखो में गड़ती थी, आज के समाज में भी उसकी वैसी ही द''ाा है। उसमें कोई परिवर्तन नहीं आया है। 65–70 वर्ष पहले की बिन्दिया आज भी समाज की नजर में बदचलन और परिवार का नाक कटाने वाली ही लगती है। कोदई को दुःख होता है कि उन्होंने बिन्दिया का अब तक विवाह न करके अच्छा नहीं किया। अपनी बेटी के ऐसे कुचरित्र को जानकर उनकी चिन्ता और भी बढ़ जाती है– आज त सीता अइसन सतवन्तियों के दुलहा मिलल मुसकिल बा, बरिसन दउड़ धूप कइलों पर कतहूँ भेंटबो करित ओकर बाप हजारे के बाजार छान दी। भले ओकरा बिआह में कानी कउड़ियों ना मिलल होखे। बाकिर बेटा के त हजार से नीचे ना चाही। आज के जमानों में लड़की भइल सबसे लमहर पाप बा।[5]

प्राचीन काल से लेकर अब तक स्त्री की हैसियत एक उत्पीड़ित और नियन्त्रित मनुष्य की बनी हुई है। अगर वह कहीं इस खांचे से अलग दिखाई देती है तो पुरातनपंथी

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 07 July- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सोच समाज को रसातल में जाने की दुहाई देने लगता है। धर्म,रूढ़ियों, सामाजिक परम्पराओं से उसे निचली पायदान पर रखने के लिए हर सम्भव प्रयास करता है।

कोदई, झमना और उसके पिता तथा गाँव के ब्राह्मण के बहकावे में आकर अपनी बेटी बिन्दिया का विवाह झमना के साथ ठीक कर देते हैं। यह सुनकर बिन्दिया अत्यन्त दुःखी होती है कि झमना ने उसके माथे पर ऐसा कलंक लगाया है जो कभी मिटाया नहीं जा सकता। उसका हृदय झमना के प्रति घृणा से भर जाता है। वह जिसे जरा भी पसन्द नहीं करती है। उसके साथ पूरी जिन्दगी कैसे काट सकती है। उसका हृदय इस जबरदस्ती थोपे गये विवाह–प्रस्ताव को स्वीकार करने से इन्कार कर देता है– ना अइसन आदमी से ऊ आपन बिआह ना करी। जिंदगी भर कुंआरे रही।[6]

तो वहीं स्त्रियों को मनसा, वाचा, कर्मणा अपने कब्जे में रखने वाले इस पुरातनपंथी समाज के प्रति उसका मन उधेड़बून करता है– गाँव का अइसन होखे दी? आज ले का कबो अइसन भइल ह? कवन कुँवार लइकी गाँव में रहल बा? अइसन कइला पर त गाँव काँचे चबा घाली।[7]

उसके हृदय में समाज के इस दकियानूसी और दोगले चरित्र के प्रति नफरत भर जाती है, जो चाहता है साँप भी मर जाए और लाठी भी ना टूटे– केहू ई ना चाहेला बिगड़ल लइकी से आपन बिआह करे। ई सभे भले चाहेला जवानी से हँसी, खेली, लपटाई बाकिर बिगड़ल जवानियों से केहूँ बिआह करे के ना चाही। आज के दुनिया के इहे चाल ह। पाप सभे करी, बाकिर पापी से छुआये के केहू ना चाही।[8]

गँवई परिवे''ा में पली बढ़ी, प्रतिकूल परिस्थितियों से लोहा लेने वाली, साहस और दृढ़ता की प्रतिमूर्ति बिन्दिया अपनी जिन्दगी को पाप के भाड़ में झोंकने के लिए तैयार नहीं है और न ही टेसुआ बहाते, छाती पीटते समाज के कायदा कानून को मूड़ी झुकाकर बर्दा''त करने के लिए तैयार है। फलतः बिन्दिया का विद्रोही मन बड़ा हिम्मत और आत्मवि''वास के साथ अपने पिता द्वारा जबरदस्ती थोपे गये विवाह सम्बन्धी प्रस्ताव को स्वीकार करने से इन्कार कर देता है। बिन्दिया के इन्कार को सुनते ही कोदई की ममता

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 07 July- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ना जाने कहाँ गायब हो जाती है। क्षणभर में ही उनके एड़ी की खीस सिर पर चढ़ जाती है। उनकी आँखें लाल टेसू हो जाती हैं। नथूना फूलाकर कहते हैं– आए! ते झमना से बिआह ना करबे?[9]

बिन्दिया भी आवे''ा में आकर उतनी दृढ़ता से उनका प्रतिकार करती है। बिन्दिया के ऐसे तेवर को देखकर कोदई की खीस और चढ़ जाती है– त का मंगरा से करबे![10]

पिता की ऐसी तीर भरी वाणी को सुनकर बिन्दिया को तो काटो खून नहीं, मानो उसे बिजली लग जाती है। उसकी देह सुन्न हो जाती है। उसका कोमल मन पिता के प्रति विद्रोह कर देता है– जब कहतार त अब ओकरे से करब।[11]

हमारी सामाजिक संरचना पितृसत्तात्मक रही है जिसमें सारा अधिकार पुरूषों के हाथ में होता है। वे किसी भी रूप में आज्ञा का उल्लंघन बर्दा''त नहीं कर पाते चाहे वह किसी स्त्री का इन्कार हो या प्रतिरोध।

परिवर्तन से डरना और संघर्ष से कतराना मनुष्य की सबसे बड़ी कायरता है। काफी सोच–विचार के बाद बिन्दिया गौर करती है। जब गाँव के लोग इस बात को मान ही लिए हैं कि बिन्दिया का मंगरा से प्रेम सम्बन्ध है तो क्यों न वो उसी से विवाह कर ले। उसने क्रोध में तो इस बात को अपने पिता से कह ही दिया है। ज्यादा से ज्यादा यही होगा कि लोग इस बात पर हँसेंगे किन्तु कोई यह कलंक तो नहीं लगाएगा कि बिन्दिया मंगरा से फंसी है। आधुनिकता की पक्षधर बिन्दिया प्राचीन मूल्यों के पक्षधर समाज और अपने पिता से विद्रोह कर देती है– ऊ झमना से बिआह क के अपना जिंदगी के नरक ना बनाई। मंगरा जोरि बियाह क के गाँव भर के देखा दी कि केहू से दबे वाली नइखे। भगत के मुँह में करिखा पोते खातिर एकरा से लमहर और दोसर उपाय ना हो सकेला। झमनो के बूझा जाई कि अक्किल दउरावे में ओकरो से टपे वाला लोग गाँव में अबो बा।[12]

बिन्दिया जिन्दगी भर घुट–घुट के जीने के बजाय घर छोड़कर मंगरा के साथ भाग तो जाती है परन्तु घर छोड़ते समय भी उसे अपने बीमार निर्बल बूढ़े पिता की चिन्ता है। पिता के प्रति नैतिक आद''ों से बँधी बिन्दिया अपने पिता के प्रति स्वयं के उत्तरदायित्व से खुद को विमुख नहीं कर पाती है। उसका अन्तर्मन, मानवीय गरिमा और

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 07 July- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

महत्ता अपने बीमार, बूढ़े, निर्बल पिता को छोड़ते समय कातर होकर घर के नौकर बुधराम से याचना करता है– बाबू बेकरिया बाड़न, केनहूँ चल–फिर नइखन सकत, हमनी के चल गइला पर उनका के केहूँ देखे वाला ना रह जाई, आ घर–दुआर खेत खरिहान सब बिला जाई। लोग लूट के खा जाई। आ बाबू छटपटा के मूँ जइहें। हम नइखी चाहत कि उनका इचको दुःख होखे। तोहरा रहला पर हमहूँ निहचित रहेब। उनको आराम मिली।[13]

सच्चाई सामने आने पर बेटी के वियोग में बेदम कोदई को बड़ा प''चाताप होता है और वह अपनी बेटी का मुँह देखने के लिए तड़प उठते हैं। बुधराम जब बिन्दिया और मंगरा को लेकर आते हैं तो अपनी बेटी को गले लगाने के लिए दौड़ पड़ते हैं। कोदई लड़खड़ाकर गिरने लगते हैं तो बिन्दिया लपककर उनको सम्भाल लेती है और उनके पैरों में सिर रखकर रोने लगती है। कोदई मंगरा और बिन्दिया को आ''ीर्वाद देते हुए कहते हैं–

चुप रह बेटी .....भगवान तोर सोहाग चान–सुरूज अइसन अमर राखसु।[14]

इतना कहकर कोदई अपना न''वर शरीर त्याग देते हैं।

इस प्रकार स्त्री स''ाक्तिकरण को मजबूत करता यह उपन्यास कथ्य और ि''ाल्प की दृष्टि से भोजपुरी साहित्य की एक अमूल्य निधि है। एक मामूली किसान की बेटी बिन्दिया गाँव समाज के सनातन परम्परा को चुनौती देते हुए नारी समाज में व्याप्त कुण्ठा को दूर कर उसे खुले वातावरण में सांस लेने के लिए प्रेरित करती है। शा''वत मूल्यों एवं परम्पराओं की डोरी में बंधना ही नारी जाति की नियति रही है किन्तु उस परम्परावादी जाल को तोड़कर स्वयं विवाह जैसी मान्यता के प्रति एक नारी का प्र''नचिह्न लगाना साहसपूर्व कदम था। बिन्दिया जिस आत्मवि''वास एवं साहस से नारी अस्मिता को बचाने के लिए लड़ती है, वह अत्यन्त ही प्र''ंसनीय है। आज से 65–70 वर्ष पहले के सामाजिक ताना–बाना को जिस बेहतरीन ढंग से बुनकर लेखक ने इस उपन्यास में स्त्री विम''ा की चर्चा की है, वह आज भी प्रासंगिक और आधुनिक है। इसे नारी–विम''ा का उपन्यास स्वीकार करते हुए विजय कुमार तिवारी ने अपना अभिमत व्यक्त किया है– भोजपुरी के

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 07 July- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पहिला उपन्यास के गौरव से विभूषित बिन्दिया उपन्यास 13 खण्ड में लिखाइल बा। उपन्यास देखे में पढ़े में भले छोट,लघु लागता,बाकिर कथ्य–कथानक बेजोड़ बा। एह के नारी–विम''र्ा के उपन्यास कहल जात, त कवनो गलत ना मानल जाई। ई कम बात नइखे कि कवनो रचना अपना सृजन काल से ही जन मानस में बसल बा।[15]

उस समय स्त्री विम''र्ा जैसी कोई अवधारणा नहीं थी। परन्तु इसके बावजूद दृष्टि सम्पन्न रामनाथ जी ने इस उपन्यास के कथानक को नारी–विम''र्ा पर केन्द्रित किया। इसी वजह से भोजपुरी का यह प्रथम उपन्यास भोजपुरी उपन्यास जगत में मील का पत्थर साबित हुआ।

इसकी प्र''ांसा करते हुए प्रिंसिपल मनोरंजन प्रसाद सिन्हा ने अपने विचार व्यक्त किए हैं–पाण्डेजी के भाषा बड़ा सुन्दर बा, जीअत–जागत, चमकत–झमकत, फुदकत–नाचत। गाँव के खेत के अउरी पवधन के बड़ा सुन्दर सजीव बरनन बा। कथानक अउरी चरित्र–चित्रणो सुन्दर भइल ह। उनका कलम के तेज से पात्र सजीव हो उठल ह। कोदई बुधराम झमना, मंगरा, भगत, पुरोहित, पूजेरी अउरी बिन्दिया सभे जीअत–जागत बा। कहीं ढेर बढ़ा–चढ़ा के नइखे लिखल गइल। सामने किसान जीवन के चित्र आ जाता। बिंदिया त बिंदिया ह। कोदई अउरी बुधरामो के बहुत अच्छा तस्वीर आइल ह। हम पांडे जी के अइसन किताब लिखे खातिर बधाई देतानी अउरी आसा करतानी कि आगे उहां का कुछ अउरी नीमन चीज देब। बिन्दिया से जीउ लुलुआ गइल अउरी लालच बढ़ गइल।[16]

उपन्यास की भाषा–''ौली सरल, सरस एवं अत्यन्त प्रभाव''ाली है जो शुरू से अन्त तक पाठक को बाँधे रखती है। भोजपुरी भाषा के खांटी, गँवई, टकसाली, कहावतों और मुहावरों का सटीक प्रयोग काबिले तारीफ है जैसे– निगोड़ी हमरा मुँह में करिखा पोत देलस। उपन्यास में गाँव के प्रकृति का बहुत ही मनोरम ढंग से जीवन्त चित्र प्रस्तुत किया गया है। जैसे– अठमी के चान आकास में हँसत रहे।[17]

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 07 July- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

**निश्कर्श** –

इस प्रकार सगरो देहिया बलम के जगिरदारी हऽ जैसे सामाजिक मनोवृत्तियों का तिरस्कार करने वाली बिन्दिया आज भी समसामयिक और सर्वथा प्रासंगिक है। इस उपन्यास में बिन्दिया के विद्रोही तेवर में जहाँ आज के प्रगति''ील अधुना स्त्री के रंग दिखलाई पड़ते हैं वहीं कोदई के रूप में पुत्री के लिए वृद्ध पिता के मन का दर्द और व्याकुलता भी दिखाई देती है। जहाँ स्नेह का नाता निभाने वाले बुधराम का सुन्दर चरित्र दिखाई देता है वहीं पुजारी के रूप में गँवई नीचता और कुचाल का हाल तथा झमना के रूप में ईष्यालु रस का दस्तावेज भी देखने को मिलता है।

**सन्दर्भ**–

1. लेखक– रामनाथ पाण्डेय, 'बिन्दिया' प्रका''ान वर्ष–संवत् 2028 वि0. प्रका''ाक– भोजपुरी संसद जगतगंज वाराणसी पृष्ठ सं0– 14,
2. वही, पृष्ठ सं0– 14–15
3. वही, पृष्ठ सं0– 16
4. वही, पृष्ठ सं0– 20
5. वही, पृष्ठ सं0– 26
6. वही, पृष्ठ सं0– 71
7. वही, पृष्ठ सं0– 71
8. वही, पृष्ठ सं0– 71
9. वही, पृष्ठ सं0– 72
10. वही, पृष्ठ सं0– 72
11. वही, पृष्ठ सं0– 72
12. वही, पृष्ठ सं0– 75
13. वही, पृष्ठ सं0– 87
14. वही, पृष्ठ सं0– 110

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 07 July- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

15. विजय कुमार तिवारी, भोजपुरी साहित्य सरिता, जनवरी–फरवरी 2022, पृष्ठ संख्या–25
16. लेखक– रामनाथ पाण्डेय, 'बिन्दिया' प्रका''ान वर्ष–संवत् 2028 वि0. प्रका''ाक– भोजपुरी संसद जगतगंज वाराणसी, पृष्ठ सं0– 5
17. वही, पृष्ठ सं0– 57–58